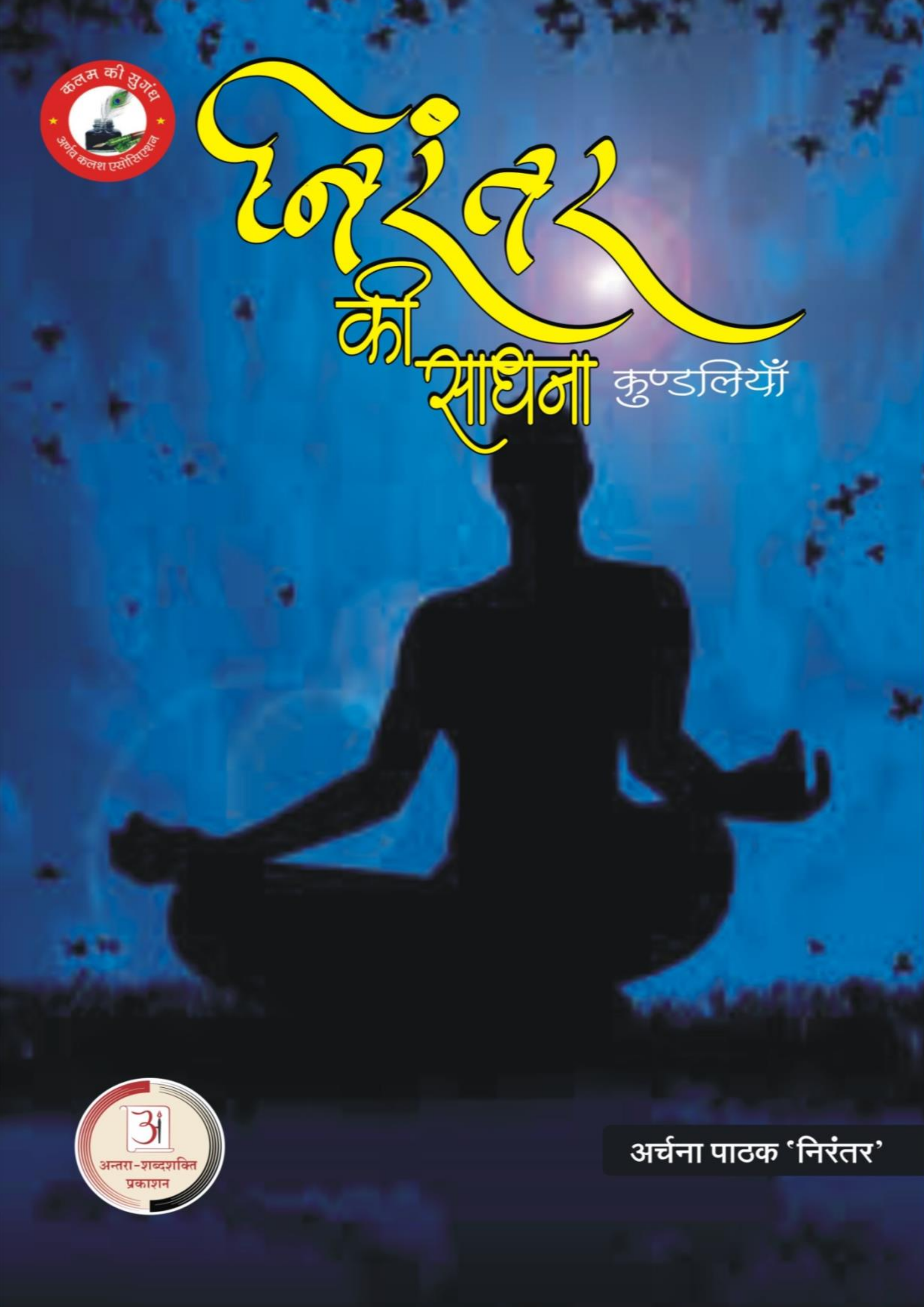

कलम की सुगंध
अर्णव कलश एसोसिएशन

निरंतर की साधना

कुण्डलियाँ

अर्चना पाठक 'निरंतर'

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

निरंतर की साधना

कलम की सुगंध छंदशाला.

अर्चना पाठक 'निरंतर'

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन

वारासिवनी, मध्यप्रदेश

978-93-5372-233-3
संपादक अनिता मंदिलवार "सपना"
आवरण चित्र- संदीप कुमार सोनी, वारासिवनी
मुख्य कार्यालय- डॉ. प्रीति समकित सुराना, 15 नेहरू चौक, वारासिवनी,
जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331
मोबाईल- 9424765259, 9009465259
मोबाईल- 9424765259
ईमेल- antrashabdshakti@gmail.com
वेबसाईट- www.antrashabdshakti
प्रथम संस्करण- 2020, अर्चना पाठक 'निरंतर'
मूल्य- 90.00 रूपये
मुद्रक शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी
THE BOOK WRITTEN BY ARCHNA PATHAK NIRANTAR

वैधानिक चेतावनी- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तराशब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषा शैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वादविवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

भूमिका

चले निरंतर लेखनी, चमके सृजन ताज।
ईश्वर की महिमा रहे, पूरे हों सब काज।।

कलम की सुगंध छंदशाला के द्वारा समय समय पर छंद विधाओं पर शतकवीर आयोजन होता रहता है। इसके पहले दोहा, रोला, चौपाई, कुण्डलियाँ शतकवीर का सफल आयोजन हो चुका है। आगे भी कई विधाओं पल शतकवीर का आयोजन करने का विचार प्रस्तावित है। ये सभी आयोजन पटल के संस्थापक आदरणीय गुरू संजय कौशिक विज्ञात जी के निर्देशन में संपन्न होते रहें है।

इस बार शतकवीर आयोजन में शामिल रचनाकारों की सौ कुण्डलियों को पुस्तक रूप देने की योजना आदरणीय संजय कौशिक विज्ञात जी के निर्देशानुसार कलम की सुगंध ने अंतरा शब्दशक्ति प्रकाशन के सौजन्य से प्रकाशित करने की योजना बनाई। आदरणीया प्रीति सुराना जी ने सहर्ष स्वीकार किया। हम उनके बहुत आभारी हैं।

इसी क्रम में आदरणीया अर्चना पाठक निरन्तर जी का एकल संग्रह "निरन्तर की साधना" प्रकाशन में है। सर्वप्रथम आदरणीया अर्चना जी को हार्दिक शुभकामनाएँ और बधाइयाँ। आदरणीया अर्चना जी की साहित्य साधना अनवरत जारी है। कुण्डलियाँ जैसे कठिन छंद विधा पर सतत कलम चलना आपकी साहित्यिक सृजनात्मकता का परिचायक है।

माँ शारदे की कृपा से आपकी लेखनी नई यात्रा तय कर अपनी निर्धारित मंजिल को अवश्य प्राप्त करेगी।

मुख्य संचालिका
अनिता मंदिलवार सपना
कलम की सुगंध छंदशाला

समीक्षा

आदरणीय अर्चना पाठक 'निरंतर' जी आपने लगातार 100 कुण्डलियाँ छंद लिखकर अपनी असाधारण प्रतिभा का परिचय दिया, मुझे अत्यंत खुशी हो रही है कि कुण्डलियाँ संग्रह की समीक्षा का कार्य मुझे सौंपा गया है। आपके कई साझा संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं, विभिन्न मंचों से आपको अनेकों साहित्यिक सम्मान प्राप्त हुए।

आपने कवि सम्मेलनों में गीत की सस्वर प्रस्तुति दी है, 20 वर्षो से लगातार आकाशवाणी से आपके काव्य पाठ का प्रसारण हो रहा है। ये साहित्यिक उपलब्धियाँ आपके उत्कृष्ट साहित्यकारा होने की पहचान है, कुण्डलियाँ जैसी कठिन छंद को आपकी लेखनी ने बहुत ही सहज और सरल बना दी, जो प्रशंसनीय है।

आपने अनेकों विषयों को कुण्डलियाँ में समाहित की हैं, उन्हें प्राकृतिक बिम्बों से सजाया सँवारा है, शिल्प सधे हुए, भाव उत्तम और भाषा सरल और सुन्दर है, जो पाठक वर्ग के हृदय तक पहुँचने के लिए पर्याप्त है ।

"निरंतर की साधना कुण्डलियाँ"

आपका यह सृजन साहित्य की ऊंचाइयों को छुए इसी कामना के साथ हार्दिक शुभकामनाएँ, और बहुत बहुत बधाई।

सरोज दुबे 'विधा'
रायपुर छत्तीसगढ़
धन्यवाद

शुभकामना संदेश

प्रिय अर्चना पाठक निरन्तर जी,

कलम की सुगंध पर आपकी सशक्त कलम अनेक छंद विधाओं पर निरन्तर नियमित सृजन करती आ रही है। कुण्डलियाँ का शतक सृजन करने जैसी विशेष उपलब्धि और उसके पश्चात आपका यह एकल संग्रह आपकी छंद विधा पर समझ और सतत श्रम का परिचायक है। यह संग्रह 'निरन्तर की साधना' विभिन्न विषयों को समेटे हुए एक अनुपम और अनोखा संग्रह है। पाठक वर्ग इसे पढ़ते हुए अनेक रसों का स्वाद चखकर निश्चय ही आनंद प्राप्त करेगा। यह उपलब्धि आपको भी जीवन भर आनंद की अनुभूति देती रहेगी और इस प्रकार से आप सैकड़ों संग्रह प्रकाशित करवाकर शुद्ध साहित्यकार के रूप में विशेष स्थान प्राप्त करें। इन्हीं शब्दों के साथ आपको ढेरों बधाई एवं मंगलकामनाएं....!

संजय कौशिक 'विज्ञात'
संस्थापक
कलम की सुगंध

कवयित्री की कलम से

करती सदा प्रणाम हूँ, जय हो गुरु विज्ञात।
छंद विधा सिखला दिया, मैं विमूढ़ अज्ञात।।
मैं विमूढ़ अज्ञात, सितारा बन अब चमकी।
करने की थी चाह, निष्ठ रहकर तब दमकी।।
'सपना' शाला छंद, सीखने की   है धरती।
किया लगन साकार, सदा वंदन मैं करती।।

अत्यंत हर्ष पूर्वक यह कहना है कि आज अंतरा शब्दशक्ति प्रकाशन के माध्यम से मेरा प्रथम छंद संग्रह जिसमें 100 कुंडलियाँ सम्मिलित की गई हैं प्रकाशित हो रहा है। 'निरंतर की साधना, कुंडलियाँ सृजन 50 दिवस के सतत परिश्रम से बनी हुई है। यह मेरी साधना थी। कठिन छंद पर निरंतर अभ्यास से ही ये कुंडलियाँ बन पाईं इसलिए इस पुस्तक का नाम 'निरंतर की साधना' मैंने रखा। मुझे विश्वास है मेरी यह साधना पाठक वर्ग के मानस पटल पर एक अमिट छाप छोड़ेगी। आदरणीय गुरु विज्ञात जी का हृदय से धन्यवाद करती हूँ जिन्होंने मुझे समीक्षक टीम में जगह देकर सरस्वती टीम की मुख्य प्रभारी नियुक्त किया और वहीं से समीक्षा का सफर शुरू हुआ। इसके लिए मैंने सभी की कुंडलियों का अध्ययन किया। धीरेधीरे मेरे लेखन में परिमार्जन हुआ। साथ ही सखी अनिता मंदिलवार 'सपना' जी का हृदय से धन्यवाद करती हूँ जिन्होंने मुझे यह उत्तम अवसर प्रदान किया। यह पुस्तक मैं अपने माता जी और पिता जी को समर्पित करती हूँ।

अर्चना पाठक 'निरंतर'
व्याख्याता रसायन शास्त्र.
ब्रम्हरोड, अम्बिकापुर
जिलासरगुजा, छत्तीसगढ़

1.

वेणी

वेणी लहराये जहाँ, करती पवन विहार।
इठलाती बल खा रही, सुंदर केश निहार।।
सुंदर केश निहार, बने वेणी जब जूड़ा।
लगती अद्‌भुत नार, कभी बिखराये चूड़ा।।
दिन-दिन बढ़ता रूप, बने सुंदर तम श्रेणी।
लगती ठंडी धूप, गढ़ो लहराती वेणी।।

2.

कुमकुम

माथा चमके रंग से, कुमकुम तिलक लगाय।
तेज बढ़े मुखड़ा खिले, ऊर्जा तब मिल जाय।।
ऊर्जा तब मिल जाय, भाल ओजस्वी पूरा।
प्रतिदिन कुमकुम धार्य, सदैव बढ़े ही नूरा।।
हैं प्रसिद्‌ध वो आर्य, सुनो वैदिक शिव गाथा।
शुभ सदैव हो प्रात, सदा दम के हैं माथा।।

3.

कजरा

आँखों में कजरा लगा, लगते नैन कटार।
चितवन है मधु गामिनी, छुप के देख अटार।।
छुप के देख अटार, मटक रहती कजरारी।
नजर हुई जब चार, झुकी कारी मतवारी।।
लोगों की जब हाय, उड़े सुन्दर पाँखों में।
काजल भर के झाँक, नयन मृग सी आखों में।।

4.

गजरा

बाला अब गजरा लगा, पीला केसर रंग।
बनते पुष्पों से भले, सज्जा अनुपम ढंग।।
सज्जा अनुपम ढंग, त्रिवेणी चाँद लगाते।
मधुर बिखरती गंध, भाव हैं हृदय जगाते।।
बोल "निरंतर" राज, केश लहराते काला।
सुघर रखे व्यक्तित्व, पूज्य बनती सब बाला।।

5.

पायल

मेरी पायल गूँजती, झनझन करती साज।
धीमे पाँव धरा रही, मस्त मगन भर आज।।
मस्त मगन भर आज, बढ़े तब शोभा नारी।
घर आँगन गुँजाय, पड़ोसन खुश है सारी।।
कहे निरंतर आज, कैद है पायल में तेरी।
दुल्हन बन झनकाय, बनी अब परिणिति मेरी।।

6.

कंगन

मोहे कंगन चाहिए, चमकीले नगदार।
हाथ घुमा के नाच लूँ, अब न रहूँ मन मार।।
अब न रहूँ मन मार, कभी कंगन खनकाऊँ।
धारे वसन मिलान, मौन मन कर झनकाऊँ।।
पहन "निरंतर" आज, मिले सुख तन मन सोहे।
बढ़ जाये सौभाग्य, सदा ललचाये मोहे।।

7.

बिंदी

बिन्दी मुख चमका रही, झाँके लटके बाल।
मुख में दिखे प्रसन्नता, हो सिंदूरी गाल।।
हो सिंदूरी गाल, तेज से पूरा माथा।
हो न जानकर भूल, कहे संस्कृति की गाथा।।
बोल 'निरंतर' आज, गर्व हम सबकी हिंदी।
भाल सदा है साथ, सुहाग कहे ये बिन्दी।।

8.

डोली

डोली दुल्हन की उठी, ढोये चार कहार।
सज सँवरी सकुचा रही, सपने लिए हजार।।
सपने लिए हजार, प्यार बाबुल का छोड़े।
नव रिश्तों की आस, डोर कोई मत तोड़े।।
कहे निरंतर आज, ठीक पीहर की होली।
बाबुल पाये चैन, श्रेष्ठ घर जाये डोली।।

9.

आँचल

माँ के आँचल के तले, मिलता सुख दिन रैन।
हर दुख की भागी बने, पीड़ा हरे न चैन।।
पीड़ा हरे न चैन, छाँव लगती है मीठी।
पावन माँ की गोद, बिना इसके सब सीठी।।
निर्भयता को पाल, कई बालक शिशु झाँके।
सब तनाव से दूर, तृप्त आँचल में माँ के।।

10.

कजरा

डालो कजरा आँख में, गहरा होवे रंग।
इन अँखियन की झील में, दुनियाँ नहिँ बेरंग।।
दुनियाँ नहिँ बेरंग, धुँधलका छँटकर फैले।
आँखें करती बात, दूर कलुषित मन मैले।।
नयन कहे मृग हूर, नूर साजन का पा लो।
कहती सदा सुहाग, नयन अंजन सब डालो।।

11.

चूड़ी

चूड़ी यूँ बजती रहे, गूँजे घर संसार।
उसकी धुन की गूँज से, जीवन सुखी पसार।।
जीवन सुखी पसार, यही है प्रेम निशानी।
भंगुर चूड़ी काँच, कहे अनगिनत कहानी।।
झंकृत मधुरम गीत, कभी जब बेले पूड़ी।
रहता अमर सुहाग, सजे हाथों में चूड़ी।।

12.

झुमका

कानों में झुमका रहे, चमचम कर दिल लूट।
सोने का न कभी रहा, देख गया गिर टूट।।
देख गया गिर टूट, बिखेरे सीप हजारों।
मेले में हूँ घूम, संग आओ न बहारों।
खुश थी कभी अपार, मिले कुछ पल दानों में।
देखो गूँथ बटोर, दिया पहना कानों में।।

13.

जीवन

कैसा जीवन हो गया, दौड़ रहे सब लोग।
तन पापी के फेर में, गलत किया उपभोग।।
गलत किया उपभोग, व्यर्थ है समय गँवाया।
करते रहते भोग, पिपासा घोर समाया।।
कहे 'निरंतर' आज, ईश बन बैठा पैसा।
कम आती है लाज, हाय अब रोना कैसा।।

14.

उपवन

फूले सुन्दर पुष्प हैं, उपवन करे विहार।
खुशबू भीनी मिल रही, उनकी छटा निहार।।
उनकी छटा निहार, रंग बिखरे बहुतेरे।
नजर डाल भरपूर, करूँ हरदम मैं फेरे।।
कहे 'निरंतर' राज, गीत कजरी के झूले।
उपवन की कर सैर, लालिमा फिर से फूले।।

15.

कविता

मेरी कविता सो रही, चली उठाने आज।
विचलित हुई समाज से, देख घिनौने काज।।
देख घिनौने काज, सहम जाये अब बेटी।
कैसे फैले पंख, तीव्र ज्वाला पे लेटी।।
कर उसका सम्मान, नहीं बेटी क्या तेरी।
भरती एक हुँकार, नई बन कविता मेरी।

16.

ममता

जागी है ममता अभी, मन विचलित है आज।
मचल कहीं तनया रही, करती मन पे राज।।
करती मन पे राज, छोड़ कर मन है भारी।
अच्छा बने भविष्य, सदा तुम पे मैं वारी।।
कहे 'निरंतर' आज, तुझे मिलने अब भागी।
सो मेरी संतान, रात सारी क्यों जागी।।

17.

बाबुल

प्यारे बाबुल छोड़ के, पहुँची जब ससुराल।
सोच अधर मन में पड़ा, रहते हैं किस हाल।।
रहते हैं किस हाल, बैठ बाबुल नित सोचे।
रखे निरंतर लाज, किस्मत कभी है नोचे।।
खींचे आँगन द्वार, याद आते दिन न्यारे।
लगी मिलन की आस, गये दिन थे जो प्यारे।।

18.

भैया

भैया राखी बाँधिए, सच्ची है ये डोर।
बहना प्रेम अटूट है, खींचे रखना जोर।।
खींचे रखना जोर, तुझे हैं रोज पुकारे।
दुनियाँ से अब दूर, शीश है सदा झुका रे।।
करे 'निरंतर' खोज, साथ छूटा जब छैया।
नित आती है याद, कहाँ हो तुम गुम भैया।।

19.

बहना

बहना तुम बनके सखी, करती दिल की बात।
दिल में बसती हो सदा, दिन हो चाहे रात।।
दिन हो चाहे रात, याद आती है न्यारी।
खुश रहती हैं आप, नित्य सुख देख हमारी।।
करती सब कुछ त्याग, लुटा देती ज्यों झरना।
कहती हूँ मैं शान, बनी तुम प्यारी बहना।।

20.

सखियाँ

सखियाँ चहक रही सभी, करती हैं सब शोर।
जब मिल जाती हैं कभी, नाचे मन का मोर।।
नाचे मन का मोर, भूलकर दुख सब सारे।
चले ना कोई जोर, गये हम दिल को हारे।।
कहे निरंतर आज, उसे ढूंढे ये अखियाँ।
हर पल देती साथ, रहे खुश सारी सखियाँ।।

21.

कुनबा

कुनबा मेरा है बड़ा, पलते हैं सब लोग।
बूढ़े तो अब है नहीं, हम ही करते भोग।।
हम ही करते भोग, बचा रखा जो कमाया।
घिर आया था रोग, हमें पर दुख न थमाया।।
खूब जमाते रौब, बड़ा ऊँचा था रुतबा।
मिल के रहते साथ, बड़ा सुंदर यह कुनबा।।

22.

पीहर

पीहर की यादें बड़ी, बचपन गुजरा साल।
उछल कूद बढ़ते गये, माँ पिता बने ढाल।।
माँ पिता बने ढाल, सदा बहार ही होता।
अब भी करके याद, खूब मेरा मन रोता।।
कहे निरंतर आज, चैन फिर तूने ली हर।
भैया आए याद, बड़ा प्यारा था पीहर।।

23.

पनघट

पनघट तट सुंदर बड़ी, पानी भरती साथ।
कर हँसी ठिठोली जहाँ, मटकी भर ली हाथ।।
मटकी भर ली हाथ, लगे पीछे सब बच्चे।
सुबह हो गई शाम, आम लूटे वह कच्चे।।
कर आती है सैर, लगी रहती है जमघट।
कर सुंदर श्रृंगार, मटक आती है पनघट।।

24.

सैनिक

सैनिक सीमा पे डटे, रखे देश की आन।
रात दिन तैनात हैं, और बचाए जान।।
और बचाए जान, कभी घर वापस आता।
खूब खिलौने साथ, लिए बच्चों है भाता।।
बोल निरंतर आज, काज पूरा हो सैनिक।
कहे देश की शान, नाज तुम पर ऐ सैनिक।।

25.

कोयल

कूके कोयल बाग में, जाग रहे हैं लोग।
मधुरम ध्वनि बिखेरती, दूर हुए सब रोग।।
दूर हुए सब रोग, नशा प्रियतम का छाया।
पल-पल करता जोग, बँधा मन उसकी माया।।
कहे "निरंतर" आज, ध्वनि प्रसरित न रूके।
धारे सुन्दर रूप, पुन: वन कोयल कूके।।

26.

अम्बर

नीला अम्बर छा रहा, बन चादर मट मैल।
पंछी तो उन्मुक्त हैं, पूरी धरती फैल।।
पूरी धरती फैल, धरा को कभी निहारे।
टिमटिम तारे स्याह, गगन में खुला विहारे।।
कहे "निरंतर" रात, ओस कण करती गीला।
झीनी चादर डाल, टँके तारे नभ नीला।।

27.

अविरल

गंगा अविरल धार है, मटमैली अब रंग।
पापी के सब पाप धो, पावन करती संग।।
पावन करती संग, संग बहती ये माता।
जीवन का ये ढंग, ढंग सीखो जब आता।।
पहन निरंतर हार, हार कहती ये दंगा।
उपजाऊ हो तीर, बहे जब अविरल गंगा।।

28.

सागर

सागर की लहरें बड़ी, सिलवट है पुरजोर।
तट पे मारे चौकड़ी, खूब मचाए शोर।।
खूब मचाए शोर, गीत नदियों के गाता।
धूप पड़ी जब बूँद, बहुत खारा हो जाता।।
कहे निरंतर रीत, रीत भर जाये गागर।
लहर मिले जब और, और बन जाए सागर।।

29.

अनुपम

अनुपम करती प्रेम मैं, दूर बसे तुम हाय।
खोजूँ अब दिन रात तो, गये लिए बिन राय।।
गये लिए बिन राय, मुझे कुछ नहीं सुहाता।
फिर हो जायें एक, काश तू मुझे बुलाता।।
बन जाये कुछ बात, पुन: रिश्ते हों मधुरम।
गहरा जाये नेह, मेह जब बरसे अनुपम।।

30.

धड़कन

धड़कन बढ़ जाती कभी, आते जब तुम पास।
प्यार भरे सुन आज भी, हो तुम उतने खास।।
हो तुम उतने खास, कभी जब आकर बैठो।
सुन लो दिल की बात, हृदय में गहरी पैठो।।
करे निरंतर आज, बहुत तुम बिन है तड़पन।
सुन के तेरा नाम, यहाँ बढ़ जाती धड़कन।।

31.
वीणा

वीणा की सुन माधुरी, होती भाव विभोर।
शोभे माँ की हाथ में, विनती करूँ निहोर।।
विनती करूँ निहोर, करो पूरी अभिलाषा।
उभरे मन के भाव, तान सुन मन की भाषा।।
अवसाद सभी छोड़, गणगौर भाये मीणा।
फिर से छेड़ो तान, मुदित हो उर सुन वीणा।।

32.
नैतिक

नैतिक मूल्य घटाइये, आधुनिकता पुरजोर।
अपनी संस्कृति चाहिए, चढ़े शिखर गुर शोर।।
चढ़े शिखर गुर शोर, गलत घमंड मत ढोना।
सफलता रही दौड़, बाद में पड़ता रोना।।
हर पल है बेचैन, हुआ मानव अब भौतिक।
मिल रहा नहीं चैन, कहाँ समाज के नैतिक।।

33.
विजयी

विजयी हो यह देश तो, जग में होता नाम।
करते रोशन नाम है, बढ़े विश्व में दाम।।
बढ़े विश्व में दाम, काम ऊँचा है देखो।
मिलता है परिणाम, ध्यान से पूरी सीखो।।
कहे निरंतर बात, मात दे बन कालजयी।
मिल जाए सौगात, बने जब हम भी विजयी।।

34.

भारत

भारत देश महान है, हम सब हैं संतान।
हरे-भरे सब खेत हैं, गांवों का दे भान।।
गाँवों का दे भान, भिन्न भाषा सब बोली।
हिल मिलकर हैं साथ, मनाएँ मिलकर होली।।
कहे निरंतर बात, बढ़ी खर्चों की लागत।
विकसित सुंदर देश, शिखर पर चमके भारत।।

35.

छाया

छाया पड़ती धूप से, हम सब हैं हैरान।
शीतल सुख तन दे रही, मिटे ताप हैवान।।
मिटे ताप हैवान, सभी के मन को भाया।
छोटी बात न जान, बड़ी बनती है काया।।
प्राणी लें आराम, अनमोल इसकी माया।
कद है वो मशहूर, मिले सुख जब हो छाया।।

36.

निर्मल

निर्मल काया ही रखो, कभी न करना माफ।
मन को जो मैला रखें, दिखे कहाँ वो साफ।।
दिखे कहाँ वो साफ, बने दुर्गुण के साथी।
काम क्रोध मय लोभ, कहें अवगुण के हाथी।।
धवल बिखरता चाँद, नवल सीपी में उर्मिल।
पावन रखना भाव, सदा मन हो तब निर्मल।।

37.

विनती

विनती में ताकत बड़ी, करती प्रभु से बात।
मन ही मन संपर्क हो, करे नहीं हरि आघात।।
करे नहीं हरि आघात, सदा सुमिरन करती।
शरण निरंतर साथ, सभी पीड़ा है हरती।।
रखना सदा लाज, करो मेरी भी गिनती।
गरिमा ईश महान, सुनो भावपूर्ण विनती।।

38.

भावुक

भावुक मन निश्छल बडा, रखे भाव गंभीर।
प्रेम करे तो टूट के, बात चुभे ज्यों तीर।।
बात चुभे ज्यों तीर, सदा रहता अनुरागी।
सरल रखें स्वभाव, बने सुख दुख के भागी।।
जब टूटे विश्वास, मार लगती है चाबुक।
बिछड़ों को कर याद, कभी होती है भावुक।।

39.

धरती

धरती तन ओढे हरी, करती चुनर कमाल।
पीले-पीले फूल हैं, सरसों करे धमाल।।
सरसों करे धमाल, खिले पवन संग डाली।
गगन हुआ अंगार, खिली अद्भुत नभ लाली।।
पंछी जायें नीड़, दूर उड़ान है भरती।
धूमिल फिर आकाश, चमकती रहती धरती।।

40.

मानव

मानव जीवन है खरा, रखो कसौटी तौल।
संस्कारों से है भरा, उद्‌गारों से खोल।।
उद्‌गारों से खोल, मौन रखना है भारी।
सचमुच आँखें तोल, देख संहारक जारी।।
कहे निरंतर आज, देख बनता है दानव।
करना आदर श्रेष्ठ, दीन मत कहना मानव।।

41.

गागर

गागर पीतल का बना, करे ज्यादा कमाल।
वाद्‌य यंत्र बजता रहा, गूँजित धरा धमाल।।
गूँजित धरा कमाल, दूध पहुँचे घर माझा।
भरे नीर की बूँद, करे हर दुख वह साझा।।
मिट्‌टी की है जात, बने लहरों से सागर।
लहर सिलवट समेट, भाव भरती है गागर।।

42.

सरिता

सरिता नदी तरंगिणी, लेते हैं ये नाम।
आँख तब चौंधिया रही, पड़ती है जब घाम।।
पड़ती है जब घाम, किरण वापस फिर जाये।
सरि जल में जो डाल, खींच प्रकाश में लाये।।
कहे निरंतर बात, लहर निर्मल जल सविता।
गाथाएँ सुन गात, साक्ष बनती है सरिता।।

43.
गहरा

गहरा मेरा मित्र था, रूठ गया जो आज।
भूल सभी रिश्ते गया, लगा नहीं कुछ लाज।।
लगा नहीं कुछ लाज, छोड़ कर ढेरों यादें।
कर ली अंतिम भेंट, झूठ निकले सब वादे।।
कहे निरंतर बात, लगा मन पर क्या पहरा।
दिल पर करते राज, राज कह दो अब गहरा।।

44.
आँगन

आँगन सूना है किया, गलियाँ सारी भूल।
खिल जाते थे फूल भी, चुभते हैं अब शूल।।
चुभते हैं अब शूल, टूट कर बिखरी सारी।
रोती हूँ दिन-रात, समय जीता मैं हारी।।
कहे निरंतर बात, लगे मत झूठा लाँछन।
आते हैं सब याद, भरा रहता था आँगन।।

45.
आधा

आधा खिलता चाँद है, प्रहर बढ़े जब रात।
छिटकी रहती चाँदनी, मधुर लगे सब बात।।
मधुर लगे सब बात, प्रेम पागल जग सारा।
करे नहीं है काम, फिरे वह मारा मारा।।
खुलते आधे ओंठ, हुई दीवानी राधा।
भर जाता है पेट, बाँट ले रोटी आधा।।

46.

यात्रा

यात्रा चारों धाम की, कर ली मैं दो बार।
पावन देवों की धरा, नमन तुझे सौ बार।।
नमन तुझे सौ बार, धन्य जीवन हो जाता।
मिलती अनुपम सीख, नमन जब दर्शन पाता।।
कहे "निरंतर" बात, खुशी पायी है मात्रा।
चलते नदी पहाड़, सुखद रहती है यात्रा।।

47.

कोना

कोना मन का कह रहा, माँ की छवि अनूप।
एकाकी जब से रहे, झीनी आये धूप।।
झीनी आये धूप, धूप है अति महकाती।
बीती बातें याद, कभी बचपन बहकाती।।
कहे निरंतर बात, इसे तुम मत अब खोना।
हम को ले लो साथ, रहे पूरित मन कोना।।

48.

मेला

मेला यह संसार है, कर्मठता की राह।
पल में होती खत्म ये, अमरता रही चाह।।
अमरता रही चाह, टूट जाता है सपना।
सत्य सदा यह मान, कौन कहलाता अपना।।
स्नेहिल सब हैं लोग, ईश का सब यह खेला।
मिलते कितने खोज, रोज लगता है मेला।।

49.

धागा

धागा से कपड़ा बना, ढकते तन सब लोग।
रंग-बिरंगी सूत से, भागे मन के रोग।।
भागे मन के रोग, फटी अब चलो सिलाये।
टूटा जो यह प्रेम, पुन: अब कौन मिलाये।।
कहे 'निरंतर' बात, छूट कर पतंग भागा।
पकड़ खूब मजबूत, नेह उपजाये धागा।।

50.

बिखरी

बिखरी अब मन भाव है,शब्दों का बुन जाल।
चुनचुन कर अब प्रेम से,जीवन को दे ताल।।
जीवन को दे ताल, ताल कमल रहे शोभे।
कहे निरंतर बात, रूप सिमटा ही लोभे।।
मन को बेधे भाल, भाल कुमकुम से निखरी।
मन को स्वयं समेट, लगे गुमसुम यह बिखरी।।

51.

गलती

गलती मेरी माफ हो, करती हूँ मनुहार।
दिल जब दुख जाये कभी, रच डाले अनुहार।।
रच डाले अनुहार, नया सा कुछ कर पाते।
छोटी सारी बात, कहीं टूटे ये नाते।।
कहे निरंतर बात, सपन सिंदूरी पलती।
तिल बन जाये ताड़, करो मत ऐसी गलती।।

52.

बदला

बदला सारा रूप है, बदला लेगी आज।
बहुत किया विध्वंस तो, बिगड़ा सारा काज।।
बिगड़ा सारा काज, पवन धूमिल है सारा।
धुआँ भरा आकाश, रहा है बढ़ता पारा।।
कहे निरंतर बात, धरा को जैसे अदला।
अब क्या देगी साथ, ठीक वैसे ले बदला।।

53.

दुनिया

दुनिया अनुपम है बड़ी, भिन्न-भिन्न हैं लोग।
कुछ गोरे कुछ साँवले भाँति-भाँति के रोग।।
भाँति-भाँति के रोग, लगे है कभी सुहानी।
देखो रंग अनेक, कहे अनसुनी कहानी।।
पूछे कोई नाम, प्यार से कहते मुनिया।
मनभावन है धाम, सुखद लगती ये दुनिया।।

54.

तपती

तपती धरती है बड़ी, जब पड़ती है धूप।
वसुधा है मुरझा रही, रवि ने बदला रूप।।
रवि ने बदला रूप, किरण तीखी बरसाये।
मीठी लगती सूप, स्वादु मन फिर हरषाये।।
कहे निरंतर बात, सफेदी रंगत जमती।
बढ़ जाए जब ताप, धरा उष्मित है तपती।।

55.

मेरा

मेरा कुछ अब है कहाँ, कहने की बस बात।
कहते थे अपना जिसे, बिछुड़े आई रात।।
बिछुड़े आई रात, बोल कहते हैं तीखा।
डरने की क्या बात, कठिन राहों से सीखा।।
कहे निरंतर बात, साथ मिलता कब तेरा।
फिर भी दिल में आस,रहे बस बन के मेरा।।

56.

सबका

सबका साथ मिले सदा, कहती हूँ यह बात।
हिल मिल के सबसे रहें, कष्टों को दें मात।।
कष्टों को दें मात, जुड़े सब अपना कहते।
बना रहे यह साथ, सदा दिल में ही रहते।।
कहे 'निरंतर' आज, मिले हैं बिछुड़े तब का।
रिश्ते बड़े कमाल, रहे जब दुलार सबका।।

57.

आगे

आगे भी रहते कभी, सबको दिया पछाड़।
मन में भर के हौसला, चढ़ती रही पहाड़।।
चढ़ती रही पहाड़, फूल सा जीवन भाये।
करती परिश्रम आज,गीत सुख के कल गाये।।
कहती 'निरंतर' बात, नींद से फिर अब जागे।
थक के रोक मत चाल, बढ़ो सदैव ही आगे।।

58.

मौसम

आया मौसम खास ये, दहके टेसू लाल।
कोयल छेड़ी तान है, पुरवइया दे ताल।।
पुरवइया दे ताल, प्रकृति भी हुई सुहानी।
गाये वियोग गीत, याद दिलाये पुरानी।।
कहे निरंतर आज, सभी के मन को भाया।
अनुपम यह मधुमास, हर्ष बरसाने आया।।

59.

जाना

जाना सबको है कभी, रहना भी यदि चाह।
पल दो पल का साथ है, अपनी अपनी राह।।
अपनी-अपनी राह, यहाँ कुछ करके जाएँ।
हमको होगा नाज, खास जो लेकर आएँ।।
कहे निरंतर बात, सदा जो मन की माना।
टूटे मत विश्वास, भले ही तज कर जाना।।

60.

करना

करना है यदि काम तो, मन से कर लो आज।
पूरी निष्ठा से करो, आदत से हो बाज।।
आदत से हो बाज, मिले मंजिल फिर कैसे।
छेड़ो कोई साज, मधुर गायन हो जैसे।।
कहे 'निरंतर' बात, पिछड़ जाओगे वरना।
आलस का हो त्याग,लगन से कुछ भी करना।।

61.

दीपक

देता दीपक प्रकाश तो, सबको ऐसी सीख।
जलकर खुद ही राख हो, लेता कभी न भीख।।
लेता कभी न भीख, हमें सच पर है चलना।
रोशन कर दे राह, पड़े फिर हाथ न मलना।।
कहे 'निरंतर' बात, समर्पण पूरी लेता।
बाती का हो साथ, उजाला दीपक देता।।

62.

पूजा

पूजा मन से कीजिए, पूरी होगी आस।
पाने की चिंता नहीं, एक सुखद अहसास।।
एक सुखद अहसास, खुशी अद्‌भुत है मिलती।
चली मंदिर की ओर, सदा दर्शन पा हिलती।।
कहे निरंतर आज, मिले अनुपम सुख दूजा।
कुमकुम हल्दी फूल, ईश वंदन है पूजा।।

63.

थाली

थाली कई प्रकार की, भोजन करते लोग।
तृप्त क्षुधा अब हो रही, फिर फिर माँगे भोग।।
फिर फिर माँगे भोग, देख मन अति हरषाया।
गिरकर करता शोर, बहुत तब सुख बरसाया।।
कहे 'निरंतर' बात, प्रेम उपजाये माली।
कुमकुम हल्दी दीप, आरती की यह थाली।।

64.

बाती

बाती बन जलती रही, जब तक रहता तेल।
रोशन जग करता रहे, सबका सबसे मेल।।
सबका सबसे मेल, पूर्ण निष्ठा से रहती।
कहे 'निरंतर' खास, बात हरदम ये कहती।।
जीवन का यह सार, देख तिल-तिल मर जाती।
देती है ये साथ, रहे चिर दीया बाती।।

65.

आशा

आशा तुमसे है मुझे, पूरा पढ़ लो पाठ।
बहुत कठिन है साधना, मन में भर लो गाँठ।।
मन में भर लो गाँठ, परीक्षा की अँगड़ाई।
कुछ न सुहाता बाद, दिखे है सिर्फ पढ़ाई।।
कहे 'निरंतर' आज, कभी फेंको प्रभु पाशा।
श्रम कर ऐसा खास, पूर्ण हो सबकी आशा।।

66.

उड़ना

उड़ना है आकाश में, डोर तुम्हारे हाथ।
उतनी ही तुम ढील दो, बना रहे यह साथ।।
बना रहे यह साथ, नहीं अपनी मनमानी।
करते हो तुम नाथ, कभी हरकत बचकानी।।
कहे 'निरंतर' आज, नहीं पीछे है मुड़ना।
रहे सदा ही चाह, गगन में ऊँची उड़ना।।

67.

खिलना

खिलना है तुमको अभी, गुड़िया सुन्दर फूल।
चुभती नजरों से बचा, झोंक आँख में धूल।।
झोंक आँख में धूल, नील अम्बर में उड़ना।
फैला पूरी पंख, लक्ष्य प्रयास से जुड़ना।।
कहे निरंतर आज, सफलता तय है मिलना।
डट काँटो के बीच, उभर कर सुंदर खिलना।।

68.

होली

होली का त्योहार दे, रंगों भरी फुहार।
घर आँगन में झूमती, लाई संग बहार।।
लाई संग बहार, देख मुखड़े की लाली।
खुशबू दे पकवान, सखी बरसाये गाली।।
कहे निरंतर आज, झेल सीने पे गोली।
सीमा पर तैनात, चैन हम खेले होली।।

69.

साजन

साजन है जब साथ में, पूरा घर संसार।
बाबुल का घर छोड़ के, आई तेरे द्वार।।
आई तेरे द्वार, प्रेम की हूँ अभिलाषी।
देना हरदम साथ, वचन कहना मृदुभाषी।।
कहे निरंतर बात, बनूँ रानी तू राजन।
मत करना तुम घात, सदा रहना तुम साजन।।

70.

सजना

सजना साथ निभाइये, जन्म जन्म की बात।
सजती रहती मैं यहाँ, दिन हो चाहे रात।।
दिन हो चाहे रात, सदा ही श्याम लुभाना।
आएँगे वो पास, कभी काँटे न चुभाना।।
कहे निरंतर आज, शुरू हो मुरली बजना।
मीठी वाणी बोल, पिया बिन कैसा सजना।।

71.

डोरी

डोरी मेरे प्रेम की, बाँध जरा मजबूत।
झटके से मत तोड़ना, ये हैं कच्चे सूत।।
ये हैं कच्चे सूत, जरा विश्वास दिखाओ।
पड़ जाए जब गाँठ, इसे धीरे सुलझाओ।।
कहे 'निरंतर' बात, निकट आ जाए गोरी।
प्रेम और सौहार्द, कभी टूटे मत डोरी।।

72.

बोली

बोली मेरे देश में, बोले कई प्रकार।
अपने-अपने रंग हैं, अपनी है झंकार।।
अपनी है झंकार, मधुर सरगुजिहा भाये।
हैं मिट्टी के लोग, भाव मुखड़े पे लाये।।
कहे 'निरंतर' आज, सुनो दुनिया है डोली।
हिंदी के ये पूत, बड़ी मीठी है बोली।।

73.
पाना

पाना है संतोष तो, खुशियाँ हो भरपूर।
छोटी-छोटी बात पे, हँस लें सभी जरूर।।
हँस ले सभी जरूर, तान कुछ हमें सुनाओ।
घरआँगन हो स्वच्छ, नित्य तम दीप जलाओ।।
कहे निरंतर बात, शाम घर वापस आना।
मिलने की हो चाह, मुझे है तुमको पाना।।

74.
खोना

खोना पाना है यहाँ, क्या लाया था साथ।
खाली अपना आगमन, भेजे हैं प्रभु नाथ।।
भेजे हैं प्रभु नाथ, लोभ मद लालच छोड़ो।
कन्या रहे सशक्त, लाज के बंधन तोड़ो।।
कहे निरंतर बात, छोड़ अबला का रोना।
रखना हरदम धैर्य, नहीं निज आपा खोना।।

75.
यादें

यादें अपनी दे गया, वो बचपन भी खूब।
नटखट सी शैतानियाँ, खेलें चढ़ती धूप।।
खेलें चढ़ती धूप, सखा सपने में आये।
तड़पाये मन प्राण, कभी भी लौट न पाये।।
करे निरंतर बात, बहुत तड़पाती नादें।
मीठा-मीठा साथ, शेष बचपन की यादें।।

76.

छोटी

छोटी-सी ये जिंदगी, रखना इसे सँभाल।
जी सको सभी हाल में, खुद को ऐसा ढाल।।
खुद को ऐसा ढाल, जटिल राहें हो सीधी।
मन में बाँधो गाँठ, आस रखना मत आधी।।
कहे निरंतर बात, पेट भरती है रोटी।
करे बड़ा वो काम, लगे दिखने में छोटी।।

77.

मीठी

मीठी लगती है मुझे, प्यार भरी मुस्कान।
स्नेह भरे दो नैन हैं, मुखड़े की हैं शान।।
मुखड़े की हैं शान, लगे बोली गुड़ भेली।
आओ कर लो बात, बहुत तकलीफें झेली।।
बैठ निरंतर पास, कहूँ क्या अब हूँ सीठी।
तुतलाते हैं बोल, बहुत लगती है मीठी।।

78.

बातें

बातें करे लुभावनी, मन में बजती ताल।
चपल लगे हैं चंचला, रखना ऊँचा भाल।।
रखना ऊँचा भाल, कभी भी सिर न झुकाये।
कर लो ऐसा काम, शर्म से मुँह न छुपाये।।
कहे निरंतर बात, बचे तब सारे नाते।
मीठी वाणी बोल, शहद घोले जो बातें।।

79.

चमका

चमका तारा भाग्य का,करना मत अभिमान।
फल दे ये तो कर्म का, पाते हैं सम्मान।।
पाते हैं सम्मान, कभी चहुँ कीर्ति दिलाये।
अपनी-अपनी लेख, कहाँ जा रहा मिलाये।।
कहे निरंतर बात, खुशी से मुख ये दमका।
नहीं परिश्रम व्यर्थ, भाग्य फिर से है चमका।।

80.

गीता

गीता पथ दे कर्म का, कृष्णा का उपदेश।
सही राह दिखला रही, लिया युद्ध का वेश।।
लिया युद्ध का वेश, सदा मनु सार बताये।
कैसे लें मुख फेर, कष्ट स्वजन का सताये।।
कहे निरंतर बात, सदा मन को है जीता।
छोड़ राग सब द्वेष, चलो सत पर सब गीता।।

81.

माना

माना मन बेचैन है, चिंता से है चूर।
मन अनुरागी है जहाँ, रहे भले वो दूर।।
रहे भले वो दूर, याद में उसकी खोये।
छुप-छुप चुप है चाँद, रात भर हम कब सोये।
कहे निरंतर बात, चुभे है तेरा जाना।।
आ जाओगे लौट, एक दिन हमने माना।।

82.

कहना

कहना है तुमसे मुझे, इतनी बात जरूर।
पीछे हैं बाकी यहाँ, जाना मत अति दूर।।
जाना मत अति दूर, बाल बच्चे हैं प्यारे।
पत्नी जाए टूट, देख ली सपने न्यारे।।
कहे निरंतर बात, लाज रख कर तुम रहना।
बस इतनी सी आस, पास मानो ये कहना।।

83.

सहना

सहना मुश्किल है यहाँ, कोई धरे न धीर।
सह-सह आँखों में नमी, बहती बनकर पीर।।
बहती बनकर पीर, नरक सा जीवन पाये।
पतिता का यह रूप, कभी क्या जग को भाये।।
कहे निरंतर आज, बहुत कुछ हमको कहना।
रख लो अब तो लाज, पड़े क्यों उसको सहना।।

84.

वंदन

वंदन प्रभु का कीजिए, मन से करना ध्यान।
ह्रदय समाए राम तो, भर जाती है म्यान।।
भर जाती है म्यान, ज्योति भक्ति की जलाएँ।
चरणों में रख प्राण, विविध हैं मधुर कलाएँ।।
कहे निरंतर आज, लगा लो माथे चंदन।
प्रभु हैं हरदम साथ, नित्य उठ करना वंदन।।

85.

आसन

आसन ऊँचा है सदा, माता बसे पहाड़।
वरदाई सुखदायिनी, शेर चढ़ती दहाड़।।
शेर चढ़ती दहाड़, कभी ब्रह्मांड हिलाए।
सुनकर चीख पुकार, सभी को न्याय दिलाए।।
कहे निरंतर बात, करे दिल पर माँ शासन।
करती है प्रतिघात, सदा उत्तम हो आसन।।

86.

आतुर

आतुर मन मिलने चला, प्रियतम हैं जिस ओर।
मन अनुरागी प्रेम का, जिसका ओर न छोर।।
जिसका ओर न छोर, प्रीत है गहरा सागर।
सब नैनन की बात, बूँद से भरता गागर।।
कहे निरंतर आज, विकट संकट प्रेमातुर।
मन की मन में ताड़, घड़ी मिलने को आतुर।।

87.

आभा

आभा मुख मंडल बढ़ी, बढ़ता रहता तेज।
ज्ञान भरे भंडार तो, फूलों की है सेज।।
फूलों की है सेज, नियम से जो रह पाये।
सुख पाए निज चैन, चमक बढ़ती ही जाये।।
कहे निरंतर बात, बढ़े आँखों की शोभा।
करो प्रकाशित साथ, रहे माथे की आभा।।

88.

चितवन

चितवन तिरछी हो रही, नित्य बढ़े जो स्नेह।
तीर नयन जादू चला, पल-पल घिरता मेह।।
पल पल घिरता मेह, नेत्र हैं घन कजरारे।
कमर लचकती धार, मगन होते मतवारे।।
कहे निरंतर बात, कला से हरती है मन।
पथिक पथ गये भूल, देख शरारती चितवन।।

89.

मोहक

मोहक मधु मुस्कान है, अधरों की सौगात।
खिलाखिला ये रूप है, मधुर मनोहर रात।।
मधुर मनोहर रात, अधखिली सी है बेला।
चंदा छुप-छुप ओट, कभी खेले है खेला।।
कहे निरंतर बात, टँके आँचल में सोहक।
नभ नीला विस्तार, सितारे लगते मोहक।।

90.

शीतल

शीतल पवन चले जहाँ, सर-सर उड़ी पतंग।
हाथ बची बस डोर है, उड़ती मुक्त मलंग।।
उड़ती मुक्त मलंग, इशारे पर है नाचे।
कट जाये जब डोर, दर्द नभ से है बाँचे।।
कहे निरंतर बात, स्वर्ण बन जाये पीतल।
मन से मिटता क्षोभ, रहे तन पावन शीतल।।

91.

हारा

हारा मत मानो कभी,जब तक मन में जोश।
कर्म सदा करते रहो, थोड़ी तन में होश।।
थोड़ी तन में होश, हार से मत घबराओ।
त्रुटियाँ करो सुधार, चलो प्रण करने आओ।।
कहे 'निरंतर' सार, जतन हैं करते सारा।
अपनों की जब बात,जीत कर भी सब हारा।।

92.

जीता

जीता हूँ जिसके लिए, भूल गया वो आज।
हार गया हूँ जीत के, टूटा दिल का साज।।
टूटा दिल का साज, कभी भी समझ न पाया।
करता नहीं विश्राम, सदा है खटता आया।।
कहे निरंतर बात, शिखर पर गागर रीता।
रही सदा ही आस, कभी तो मैं भी जीता।।

93.

नारी

नारी है नारायणी, करती जग कल्याण।
धरा बनाए स्वर्ग सा, पढ़ती वेद पुराण।।
पढ़ती वेद पुराण, मंत्र से घर हो गुंजित।
करती सृष्टि महान, करे दिव्यमान उर्जित।।
कहे निरंतर बात, सर्वस्व तुम पे वारी।।
फिर क्यों लगती आग, आज बढ़ती है नारी।।

94.

साहस

साहस नव उत्कर्ष का, सब का हो उत्थान।
नव ऊर्जा भर साहसी, जग में रहो महान।।
जग में रहो महान, कभी हिम्मत मत हारो।
कठिन अगर हो राह, निडरता उस पे वारो।।
कहे निरंतर बात, नीर अविरल ज्यों पावस।
बस रखना ये याद, कभी कम मत हो साहस।।

95.

नटखट

नटखट कान्हा साँवरे, गोप सखा के साथ।
अधरों पे मुस्कान है, लीला रचते नाथ।।
लीला रचते नाथ, बाल सखियाँ सब आओ।
बंशी अधर पुकार, गीत राधा के गाओ।।
कहे निरंतर बात, खेल में होती खटपट।
छुपने को तैयार, कृष्ण है सचमुच नटखट।।

96.

अंकुश

अंकुश जीवन में लगा, पल-पल पर प्रतिबंध।
मन पर पहरा है लगा, कैद बनी आबंध।।
कैद बनी आबंध, भुला सीता की यादें।
जो करती है तंग, नहीं पूरी वो वादें।।
कहे निरंतर बात, कहाँ संतति सम लव कुश।
अश्व लिया है थाम, लगा राजा पे अंकुश।।

97.

चंदन

चंदन टीका श्याम का, अद्भुत बनता रूप।
मन मंदिर में जा बसे, मोहक भव्य अनूप।।
मोहक भव्य अनूप, जिया में जब बस जाते।
सुध बुध खोई बाद, रात-दिन प्रभु गुण गाते।।
कहे निरंतर बात, पंख सिर मयूर वंदन।
तिलक बढ़ाये तेज, सजा माथे पर चंदन।।

98.

थोड़ा

थोड़ा समय निकालिए, रहो बड़ों के साथ।
मातु पिता मिलते नहीं, छोड़े जब वे हाथ।।
छोड़े जब वे हाथ, कभी ठोकर हैं खाते।
कर लो मीठी बात, जरा सुख वो भी पाते।।
कहे 'निरंतर' आज, राह में आए रोड़ा।
मन में रहे उमंग, बाँट खुशियाँ जब थोड़ा।।

99.

पूरा

पूरा कुण्डलियाँ लिखें, रही बड़ी यह चाह।
नित्य साधना ही करें, मुख से निकले वाह।।
मुख से निकले वाह, चलो ये श्रम कुछ लाई।
करने की अभिलाष, खींच के ले ही आई।।
करे 'निरंतर' सोच, कहीं ये हो न अधूरा।
चिंता की क्या बात, हुआ जब सपना पूरा।।

100.

सपना

सपना पूरा हो रहा, कर लो यह स्वीकार।
कई दिनों का साथ है, अब होगा साकार।।
अब होगा साकार, करूँ मैं तो अभिनंदन।
खिलता मन का फूल, चढ़ा लो माथे चंदन।।
करे निरंतर बात, कहूँ मैं साथी अपना।
रहे खुशी से टीम, कई दिन का यह सपना।।

अर्चना पाठक 'निरंतर'

हिन्द व हिन्दी का सम्मान
है प्रमाण देशभक्ति का
आइए करें
सृजन शब्द से शक्ति का

परिचय- **अर्चना पाठक 'निरंतर'**

जन्म- १० मार्च, बलिया उत्तर प्रदेश

शिक्षा- एम.एस.सी (रसायन शास्त्र) बी.एड., एल.एल.बी.

साझा संग्रह- १. दिल के अल्फाज, २. ये दोहे बोलते हैं, ३. ये कुण्डलियाँ बोलती हैं, ४. अभीति, ५. कलम के चमकते सितारे, ६. भारत माता की जय, ७. साहित्यिकी,
८. मातृभूमि के वीर पुरोधा,

प्रकाशित रचनाओं की लगभग संख्या-१००

१. हिन्दी भाषा.कॉम में लगभग २० रचनाएँ, २. युवाप्रवर्तक मे लगभग ३० रचनाएँ, ३. प्रतिलिपि में ०५ रचनाएँ, ४.कविता बहार में ०५ रचनाएँ, ५.लघुकथा, संस्मरण, कहानी, हाइकु, मुक्तक, सायली, लेख इत्यादि चालीस (४०) से अधिक प्रकाशित।

प्राप्त सम्मान की संख्या १०० से अधिक है उनमें से कुछ का विवरण निम्न प्रकार है-

१. साहित्य रत्न २०१८ (मधुशाला साहित्यिक परिवार द्वारा), २. साहित्य सारथी सम्मान २०१८ (अखिल भारतीय साहित्य परिषद इकाई विराटनगर), ३. साहित्य रत्न सम्मान २०१८ (कलम की सुगंध द्वारा), ४. नव यौवन साहित्यिक कलम सम्मान (अर्णव कलश एसोसिएशन के राष्ट्रीय साहित्यिक मिशन कलम की सुगंध द्वारा), ५. साहित्य श्री २०१९ (मधुशाला साहित्यिक परिवार द्वारा), ६. काव्य भूषण सम्मान (मधुशाला साहित्यिक परिवार द्वारा), ७.काव्य मित्र सम्मान २०१८, ८.अज्ञेय लघु कथाकार सम्मान २०१९, ९. बसंत काव्य कलम सम्मान २०१९ (विश्व साहित्य नारी कोष द्वारा), १०. काव्य दिग्गज अलंकरण सम्मान (मधुशाला साहित्य परिवार द्वारा)अटल साहित्य रत्न सम्मान।

अन्य सम्मान- १. आकाशवाणी अंबिकापुर से लगभग २० वर्षों से लगातार काव्य पाठ का प्रसारण,
२. मंच पर काव्य पाठ - हिंदी साहित्य परिषद ,महामना मालवीय मिशन रामगढ़ महोत्सव २०१९ में गीत की प्रस्तुति, प्रतापपुर में आयोजित कवि सम्मेलन में काव्य पाठ की प्रस्तुति और अन्य कई मंचों द्वारा आयोजित कवि सम्मेलन में लगभग ३५ मंचों पर काव्य पाठ ।

ईमेल- 9424257421archana@gmail.com

मोबाइल- 9424257421

संपर्क- विश्वास एग्रो एजेंसीज ब्रहम रोड, अंबिकापुर, जिला -सरगुजा छत्तीसगढ़, पिन कोड-४९७००१

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com

15, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जिला- बालाघाट (म.प्र.), पिन 481331
संपर्क- 9424765259, अणुडाकः antrashabdshakti@gmail.com

978-93-5372-233-3

मूल्य 90/-

अन्तरा शब्दशक्ति के लिंक्स

Website:- www.antrashabdshakti.com
Facebook page:- https://www.facebook.com/antrashabdshakti/
Fecbook group:- https://www.facebook.com/groups/antraashabdshakti/